

लगभग 550 फुट पाउंड प्रति सेकंड के बराबर होता है। horse power

अश्वशाला स्त्री. (तत्.) घुड़साल, अस्तबल, जहाँ घोड़े बाँधे जाते हैं।

अश्वशास्त्र पु. (तत्.) पशु चिकित्सा विज्ञान, शालिहोत्र।

अश्वानीक पुं. (तत्.) अश्ववाहिनी, अश्वसेना, घुड़सवार सेना, रिसाला।

अश्वायुर्वेद पुं. (तत्.) अश्व चिकित्सा विज्ञान, पशु चिकित्सा विज्ञान।

अश्वारूढ़ वि. (तत्.) जो घोड़े पर सवार हो।

अश्वारोह पुं. (तत्.) 1. घुड़सवार 2. घुड़सवारी।

अश्वारोहण पुं. (तत्.) घुड़सवारी।

अश्वारोही पुं. (तत्.) घुड़सवार, वह जो घोड़े पर सवार हो।

अश्विनी स्त्री. (तत्.) 1. 27 नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र 2. घोड़ी 3. जटामांसी नामक औषधीय पौधा 4. सूर्य की पत्नी और अश्विन कुमारों की माता दे. अश्विनी कुमार।

अश्विनी कुमार पुं. (तत्.) सूर्य की पत्नी प्रभा द्वारा घोड़ी का रूप ग्रहण कर लेने पर उससे उत्पन्न दो पुत्र जो देवताओं के चिकित्सक माने जाते हैं, स्वर्वेद्य, अश्विनी सुत, अश्विनीपुत्र।

अश्विनी मुद्रा स्त्री. (तत्.) गुदा की संवरणी मांसपेशियों को सिकोड़ने और ढीला छोड़ने की क्रिया जैसा मलत्याग के समय अश्व करता है, एक योगमुद्रा जिसमें गुदा की संवरणी मांसपेशियों को संकुचित किया जाता है।

अश्वीय वि. (तत्.) 1. अश्व से संबंधित 2. घोड़े के लिए हितकर पुं. (तत्.) घोड़ों का समूह।

अश्वेत वि. (तत्.) 1. जो सफेद न हो, जिसका रंग श्वेत न हो 2. काले रंग वाले लोग, नीग्रो।

अष्ट वि. (तत्.) आठ, सात से एक अधिक और नौ से एक कम पुं. आठ की संख्या।

अष्टक पुं. (तत्.) 1. आठ वस्तुओं का संग्रह, आठ वाला समूह जैसे अष्टाध्यायी 2. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या पद्य हों 3. आठ ऋषियों का एक गण 3. आठ अवगुणों का समूह, पिशुनता, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, अर्थदूषण, वाग्दंड, साहस और पारुष्य (मनुस्मृति)।

अष्टकमल पुं. (तत्.) हठयोग में मूलाधार से मस्तक तक स्थित आठ चक्र।

अष्टका स्त्री. (तत्.) 1. आश्विन मास में श्राद्ध पक्ष की अष्टमी तिथि 2. अष्टका में किया जाने वाला 3. अगहन, पूस, माघ और फाल्गुन की कृष्णाष्टमी।

अष्टकुल पुं. (तत्.) पुराणोक्त नागजाति के आठ कुल या उनका समूह वि. पुराणों में शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक इन आठ नागकुलों के नाम आते हैं।

अष्ट कुलपर्वत पुं. (तत्.) नील, निषध, विंध्य, माल्यवान, मलय, गंधमादन, हेमकूट, हिमालय ये आठ पर्वत शृंखलाएँ।

अष्टकृष्ण पुं. (तत्.) वल्लभ संप्रदाय में माने गए कृष्ण के आठ रूप-श्रीनाथ, नवनीत प्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुल चंद्रमा और मदन मोहन।

अष्टकोण वि. (तत्.) आठ कोने वाली आकृति।

अष्टगंध पुं. (तत्.) विभिन्न देवताओं की प्रकृति एवं रुचि के अनुसार उन्हें समर्पित करने के लिए आठ प्रकार के सुगंधित द्रव्यों का मिश्रण जिनमें चंदन, अगरु, कपूर, केसर, जटामांसी, तुलसी, बिल्व, दूर्वा होते हैं। कुछ विद्वानों के मत में इसमें मेंहदी का भी समावेश होता है।

अष्टगुण पुं. (तत्.) ब्राह्मण के लिए अनिवार्य आठ गुण- दया, क्षमा, अनसूया, शुचिता, अनायास, मंगल, अकार्पण्य, अस्पृहा।

अष्टग्रह योग पुं. (तत्.) ज्यो. सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि का राहू या केतु के साथ एक ही राशि में आ जाना।